# भारतीय लोक कला के संरक्षण में प्रमुख योगदान

**शुभ्रा बरनवाल**
शोधार्थी (चित्रकला विभाग)
श्रीमती बी. डी. जैन गर्ल्स पी.जी. कॉलेज
डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय
आगरा उ.प्र.
ईमेल: *shubhrabaranwal1@gmail.com*

**डॉ. नीलम कान्त**
निर्देशिका, एसोसिएट प्रोफेसर
(विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग)
श्रीमती बी. डी. जैन गर्ल्स पी. जी. कॉलेज
डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय
आगरा उ.प्र

Reference to this paper should be made as follows:

**शुभ्रा बरनावल**
**डॉ. नीलम कान्त**

भारतीय लोक कला के संरक्षण में प्रमुख योगदान

**Artistic Narration**
July-Dec. 2024,
Vol. XV, No. 2
Article No. 30
pp. 178-185

**Online available at:**
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2024-vol-xv-no2

**सारांश**

*विश्व में भारत देश की पहचान उसके समृद्ध सांस्कृति व उसमें छूपे प्रेम व सद्भाव से है। सम्पूर्ण विश्व के पर्यटक स्थलों में भारत भी अपने विशाल धरोवर के कारण अपना विशेष स्थान रखता है क्योकि हर व्यक्ति यहाँ की समृद्धि व प्राचीन संस्कृति को देखने की चेष्टा रखता है। लोग इसे देख पा रहे हैं क्योकि इसे वर्षो से संजोया गया है। हम वर्तमान में जिन कला व संस्कृति को देख रहे है यह प्राचीन काल में इससे भी अधिक उच्च स्तर पर विकसित रही होगी। जिसके आधार पर आज कलाकार उन पारम्परिक कलाओं का अनुसरण करते आ रहे हैं। जब मानव द्वारा पहली बार लकीर खिची गई होगी तब वहाँ से चित्रकला की शुरूआत हुई होगी, तत्पश्चात यह क्रम निरन्तर चलता रहा। प्रागैतिहासिक काल में चित्रण विधि असभ्य थी जो केवल मनोरंजन व स्मृति तक सीमित थी। वैदिक काल तक आते–आते मानव पूर्ण रूप से विकसित हो गया था। उसमे सोचने विचारने की क्षमता विकसीत हो चुकी थी क्योकि वेदों का निर्माण हो गया था तथा सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रो का भी विकास हुआ। भारतीय संस्कृति के इन सभी पक्षो को उस समय के लोगो ने भी संज्ञा में लिया व अपने पूर्वजो के किये हुए कार्यो से प्रेरणा ली व अपने आस पास के समाज से भी प्रेरित हुऐ व जो उस समय की धार्मिक आस्था थी उसको सबसे अधिक महत्व दिया। मानव ईश्वरीय शक्ति को पूजनीय मानता था व जो रेखाएँ व आकृतियाँ प्रागैतिहासिक व सिन्धु सभ्यता में थे उनको प्रेरणा मानकर कला का निर्माण किया जिसमें रेखाएँ तो बाल कला की थी परन्तु भाव सर्वव्यापी थे जिसमें एक धार्मिक भावना छूपी थी व उस समय की प्रकृति पर आधारित थी जिसे आज हम लोक कला के नाम से जानते हैं। लोक का अर्थ ही है सामान्य जन द्वारा*

*किया गया दैनिक कार्य, यह कला भारत की पहचान है और समृद्ध विरासत है, जिसे लगातार कलाकारों द्वारा बचाया जा रहा है परन्तु एक कलाकार और उसके कला का संरक्षण भी आवश्यक है। अर्थात मेरे इस शोध अध्ययन का क्षेत्र ही लोककला का संरक्षण है। इसी विषय पर मेरा लघु शोध अध्ययन आधारित है। कुछ कला प्रेमियों व संरक्षकर्त्ताओं ने भारतीय लोक कला के संरक्षण के लिए एक मंच का निर्माण किया। संग्रहालय, तमाम संगठन व संस्थाओं का निर्माण किया गया और आज भी किया जा रहा है जो लोक कला व कलाकारों के विकास व संरक्षण के निरन्तर कार्यरत है। जिससे पूरे विश्व में भारतीय लोक कला किसी भी अन्य प्रकार की कला से अधिक प्रचलित है और प्रतिदिन विश्व की कला में अपना स्थान बना रही है। इस शोध अध्ययन के माध्यम से लोक कला के सभी संरक्षित स्वरूपों का अध्ययन करने का प्रयास किया जायेगा व इस विषय पर विस्तार में चर्चा की जायेगी।*

**मुख्य बिंदु**

*भारतीय धरोहर, भारतीय लोक कला, भारतीय संस्कृति, लोक कला का संरक्षण*

**उद्देश्य–** इस शोध अध्ययन के माध्यम से लोक कला की प्रारम्भिक स्थिति को जानने का प्रयास किया जायेगा की किस प्रकार लोक कलाओं का प्रारम्भ हुआ। फिर किस प्रकार वह भारतीय कला की पहचान बन गयी। इनके लुप्त स्वरूप को प्रकाश में किस प्रकार लाया गया। इसे प्रकाश में लाने के लिए किस परियोजनाओं पर कार्य किया गया व वर्तमान में लोक कला के संरक्षण के लिए क्या कार्य किये जा रहे हैं।

**अध्ययन का क्षेत्र–** यह शोध लेख भारतीय लोक चित्रकला के संरक्षण पर आधरित है। भारतीय लोक कला का दायरा विस्तृत है परन्तु मेरा यह अध्ययन मात्र लोक चित्रकला पर आधारित है। लोक चित्रकला किस प्रकार प्रारम्भ हुई। किस प्रकार कलाकार पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को संरक्षित किया। लोक कला के प्रेमियों ने किस प्रकार इस कला को खोजा व ब्रिटिश कला का प्रभाव होने के पश्चात् भी इस कला ने स्वयं को किस प्रकार संजोया। बदलते परिवेश में जहाँ कलाकार आधुनिक कला के तरफ आकृष्ठ हो रहे थे उसमें किस प्रकार भारतीय लोक कलाओं ने अपना अस्तित्व बनाये रखा। इनको संरक्षित करने के लिए कलाकारों को भारत सरकार द्वारा सहयोग प्राप्त हुआ। लोक कला के संग्रहालयों की स्थापना की गयी। कई सरकारी व गैर सरकारी संगठन व संस्थाओं का गठन किया गया। वर्तमान में राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर भी इन कलाओं को संग्रहित व संरक्षित किया जा रहा है। जो कलाकार पहले केवल चित्रण करना जानते थे वही कलाकार अब अपनी कला को बेचना भी जानते है। लोक कला के संरक्षण व कलाकारों के जीवन में बड़ते आर्थिक विकास से कलाकार आत्मविश्वासी हो गया है व इन्हे देखकर युवा कलाकार भी लोक कला में अपना भविष्य बनाने के लिए रूचि ले रहे है।

**प्रस्तावना–** लोक कला भारतीय संस्कृति का दृश्यमान रूप है। जिसमें भारतीय ग्रामीण जीवन शैली, उत्सव, त्योहार, धार्मिक संस्कार, दैनिक जीवन व भारतीय सामाजिक जीवन को प्रदर्शित करती है। ऋगवेद में लोक शब्द का उल्लेख जनसाधारण के लिए किया गया है। लोक धर्म व नाट्य धर्म का उल्लेख नाट्य शास्त्र में भरतमुनि द्वारा किया गया है। लोक चित्रकला जन–जन में व्याप्त है जिसके बिना लोक जीवन के कार्य अधुरे हैं। बारिक और सौन्दर्य युक्त रेखाओं की अपेक्षा लोक चित्रों में भाव प्रधान है। वाचस्पति गैरोला के अनुसार 'लोक कला किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक मर्यादा है। लोक कला का स्वरूप मुख्य रूप से ग्रामीण आदिवासी रहे हैं। यह सभी स्वरूप पारम्परिक थे परन्तु समय के साथ इन सभी

सांस्कृतिक रूपों में परिवर्तन आ गया है परन्तु लोक कलाओं में हम अभी भी इन सभी पारम्परिक स्वरूपों को देख सकते हैं और इन लोक कलाओं के ये स्वरूप कलाकारों द्वारा संजोये गये हैं। लोक कलाकार अपनी अपनी कला में कार्यरत हैं और अपनी कला को इन्होने अपने आय का माध्यम बनाया हुआ है। हम इन कलाओं से अछूते नही रह सकते भले ही हम कितने भी आधुनिक शहरी वातावरण में हों। 18वी. शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ईस्ट इंडिया का प्रभाव भारतीय कला पर पड़ा जिसमें अधिकतर कलाकारों ने भारतीय कला को छोड़ पाश्चात्य कला शैली को अपना लिया। 19वी शताब्दी में यूरोपीय प्रभाव के कारण भारत में कलाकारों का दो गुट बन गया जिसमें पहला समूह जो अधिकतर बंगाल क्षेत्र के रहे जिन्होने यूरोपीय मूर्तिकला व चित्रकला को अपना लिया व दूसरा कलाकार समूह जो उच्च व निम्न वर्ग के लिए भारतीय पारम्परिक ग्रामीण शैली को ही चित्रित किया। जिसके परिणाम स्वरूप लोक कलाएँ लुप्त होने लगी वह मात्र ग्रामीण अंचलो तक सीमित हो गयी। कुछ कलाकार ऐसे रहे जिन्होने अपनी कला में लोक कलाओं को समाहित किया या लोक कलाओं से प्रेरित होकर चित्रण कार्य किया परन्तु वर्तमान में जो लोक कला का विशाल स्वरूप हम देखते हैं उसकी कमी थी उस समय, इस लुप्त कला को जीवित रखने के लिए कुछ कला पारखियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कलाओं का व्यवसायीकरण किया गया ताकि इन्हे संरक्षित किया जा सके, जब कला संरक्षकों ने भारत के गांवों का भ्रमण किया तब उन्हे गाँवों के घरों व मन्दिरों की दीवारों पर सुन्दर चित्र बने हुए दिखे, इसके पश्चात् चित्रों के संरक्षण का काय किया गया।

गाँवों के इन सामान्य जनो को कला सामग्री देकर इनसे बड़े–बड़े चित्र बनवाये गये व इन चित्रों की देश–विदेश में प्रदर्शनियाँ लगाई गयी। लोगो तक कला को पहुँचाया गया। जिससे कला प्रमियों का ध्यान भारतीय लोक कलाओं की तरफ आकृष्ठ हुआ व समाज में इन चित्रों के प्रति लोगो में रूचि उत्पन्न हुई व इन चित्रों को खरीदने की मांग होने लगी। समाज में बढ़ती लोक चित्रों की मांग ने लोक कलाकारों के लिए उनकी कला से ही उनके आजीविका का प्रमुख साधन प्रदान किया। वर्तमान में भारतीय लोक कलाओं की मांग में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान डिजिटल माध्यम व ई–कार्मस का है क्योंकि इन माध्यमों से हम अपनी कला को कम से कम समय में अधिक से अधिक लोकप्रिय बना सकते है। इनके संरक्षण में राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर कार्य किया जा रहा है जो भविष्य में भी इन कलाओं को जीवित रखने में सहायक रहेंगीं। वर्तमान में कुछ ऐसे संघ, संग्रहालय व संस्थाएँ हैं जिन्होने भारतीय लोक चित्रकला व हस्त कला को संरक्षित करने व कलाकारों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः इस लेख के माध्यम से उन सभी योगदानों का अध्ययन किया जायेगा जो कुछ इस प्रकार हैं।

*1. राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली में चित्रित मधुबनी लोक चित्रकला*

जो चित्र ग्रामीण कलाकारों से बनवाये गये थे उनके संग्रह के लिए दिल्ली में **राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय** की स्थापना की गयी जो लोक कला व लोक कलाकारों के लिए एक विशिष्ठ अवसर की तरह प्रारम्भ हुआ। यह भारतीय लोक व हस्तकला के लिए प्रथम स्थायी पहल थी। 1950 से लेकर 1960 के मध्य कमलादेवी चटशेपाध्याय के कठिन प्रयासों से इस संग्रहालय की स्थापना **1956** में **अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड** द्वारा की गयी। पहले यह मात्र संग्रहालय था परन्तु भारत सरकार के विचार पर यहाँ हस्तशिल्प अकादमी की भी स्थापना की गयी जिसमें दिर्घाओं व कछाओं का निर्माण हुआ व 2015 में कारीगरों को प्रशिक्षित किया गया। परिणामस्वरूप भारतीय लोक कलाकारों को अपनी कला के लिए एक स्थायी जगह प्राप्त हुई जहाँ वह अपनी कला को प्रदर्शित कर सकते थे व लोगो तक अपनी कला को पहुँचा सकते थे। इन सभी प्रयासों से लोक कला को संरक्षण प्रदान हुआ। यह संग्रहालय भारत के सभी लोक कलाकारों को विभिन्न अवसर व मंच प्रदान करता है। वर्तमान में यहाँ संग्रहालय, स्टूडियो, पुस्तकालय, शोध डाक्यूमेट्री विभाग भी है। संरक्षण प्रयोगशाला, तस्वीर प्रयोगशाला भी है अर्थात अब लोक कला गाँव तक सीमित नही है वह कला के अन्य सभी चित्र शैलियों की तरह निरन्तर अपना स्थान बना रही हैं। यहाँ पर शिल्प कला कौशल कार्यशाला मेला का आयोजन होता है जिसमें देश के कोने–कोने से लोक व हस्त कलाकार यहाँ आकर अपना स्टॉल लगाते है व कार्यशालाओं में लोक कलाओं का प्रशिक्षण देते हैं। यहाँ **मधुबनी** कलाकार **गंगा देवी** द्वारा चित्रित भित्ति चित्र था जो वर्तमान समय में नष्ट हो चुका है। साथ ही वर्ली कलाकार **जिव्या सोमा महशे** के द्वारा बनाये गये भित्ति चित्र हैं। यहाँ भारत की समस्त लोक, जनजाति, हस्त कलाओं के कुल 3500 से भी अधिक चित्र व शिल्प संग्रहित हैं। यहाँ एक दुकान भी है जहाँ से हम भारत की तमाम लोक चित्रों व शिल्पों को खरीद सकते हैं। राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय एक प्रथम पहल रही लोक कला को संरक्षित करने के लिए परन्तु समय के साथ कई और संगठनो या संस्थाओं ने लोक कला के संरक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जो वर्तमान में भी कार्यरत हैं। जिसमें हम सर्वप्रथम दस्तकारी हाट समिति पर चर्चा करेगें।

**दस्तकारी हाट समिति–** दस्तकारी हाट समिति सभी राज्यों व शिल्पकारों का राष्ट्रीय संघ है। यह एक गैर लाभकारी संगठन है जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं व स्वयं सेवी संघ के अर्न्तगत कार्य करता है। 26 वर्षो से कार्यरत कलाकारों ने इस संघ की सहायता से आत्मनिर्भरता प्राप्त की है व संघ द्वारा आयोजित किये गए कई कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों को सम्मान व समाज में पहचान प्राप्त हुआ है। दस्कारी हाट समिति की स्थापना **1986** में हुई थी जिसे देश के प्रतिष्ठित शिल्प संगठनों में से एक माना जाता है। इसे भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, **भारत में सयुक्त राष्ट्र संघ, भारत में यूनेस्को, भारत में विश्व बैंक** और विशिष्ट परियोजनाओं के लिए प्रमुख कॉर्पोरेट क्षेत्र समूहों द्वारा मान्यता प्राप्त है। यह भारत के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्कूलों, चैंबर्स ऑफ कॉर्मस, महिला संगठनों और शिल्पकारों के साथ काम करता है। दिल्ली में लगने वाला प्रसिद्ध बाजार **'दिल्ली हाट'** दस्तकारी हाट समिति की पहल है इस हाट की सहायता से शिल्पकारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना इसका लक्ष्य है। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए नियमित रूप से प्रमुख विपरण कार्यक्रम आयेजित करता है। इस संघ द्वारा बड़े स्तर पर देश के शिल्प व वस्त्रों का दस्तावेजीकरण करते हुए ''भारतीय शिल्प यात्रा'' नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया था। इसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति द्वारा फरवरी 2005 में किया गया। इस प्रदर्शनी को सराहना व सफलता प्राप्त हुई। हाल ही में समिति ने आई.जी.एन.सी. के माध्यम से संस्कृति मंत्रालय द्वारा नियुक्त किए गए नये संसद भवन की संपूर्ण शिल्प गैलरी के लिए 8 प्रमुख कलाकृति, शिल्प व वस्त्र प्रतिष्ठान का कार्य किया। यह पूरी कलाकृतियाँ

हस्तनिर्मित थी जिसे 400 कलाकारों द्वारा बनाया गया था। यह समिति अपने वेबसाईट के माध्यम से विभिन्न कलारूपों व शिल्पों को बेचने के कार्य करती है जो कार्यरत लोक कलाकारों द्वारा ही निर्मित किये जाते हैं।

*2,3. महिला सशक्तिकरण के अर्न्तगत समिति की महिला कलाकारों द्वारा हस्तनिर्मित कलात्मक उपयोगी वस्तुएँ*

समिति द्वारा पारम्परिक कारीगारों के लिए एक विपरण बुनियादी ढ़ांचे का निर्माण किया गया है, जो **'दिल्ली हाट'** के नाम से प्रचलित है। जिसकी स्थापना **1994** में **दिल्ली पर्यटन विभाग, वस्त्र मंत्रालय व नई दिल्ली नगर निगम** द्वारा सयुक्त रूप से की गयी हैं। एक पारम्परिक ग्रामीण बाजार की समकालीन व्याख्या के रूप में यह शिल्प बाजार कार्य करता है। दिल्ली हाट ने पंद्रह वर्षो में 75,000 से भी अधिक लघु शिल्प उत्पादों के द्वारा 20 लाख से अधिक ग्राहकों को शिल्प व हथकरघा वस्त्रों की सीधी बिक्री करने में सक्षम बनाया है। कारीगर यहाँ 15 दिन रूकते हैं, जिससे सभी कारीगरों के द्वारा पूरे वर्ष उत्पादों की बहुरूपदर्शक प्रस्तुति होती है। भारत सरकार द्वारा 'दिल्ली हाट' को देश के अन्य नगरों मे भी प्रारम्भ किया गया है, जो निम्नलिखित हैं– **जयपुर, अहमदाबाद, कश्मीर, भोपाल, भुवनेश्वर, शिल्परामन, हैदराबाद, मैसूर**। दिल्ली हाट दिल्ली शहर का अत्यधिक लोकप्रिय स्थल है। शिल्प व लोक कला के अर्न्तगत बाजार में अपनी कला का विस्तार करने के प्रयास में इस समिति ने बड़ी उपलब्धि प्राप्त की है। भारतीय लोक चित्रों को प्रकाश में लाने के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय व पुपुल जयकर का भी महत्वपूर्ण योगदान है। **कमलादेवी चट्टोपाध्याय** एक भारतीय समाजसुधारक, स्वतंत्रता सेनानी तथा भारतीय हस्तकला के क्षेत्र में नवजागरण लाने वाली महिला थी।[1] **पुपुल जयकर** भारतीय सांस्कृतिक कार्यकर्ता व लेखिका थी। इन्हे स्वतंत्रता पश्चात् पारम्परिक तथा ग्राम कला, हथकरघा व हस्तशिल्प के पुनरूद्धान के लिए जाना जाता है। इन्होने भारतीय कला उत्सवों की श्रृंखला 1980 में फ्रांस, अमेरिका व जापान में आयोजित किये जिससे पश्चिम में भारतीय कलाओं को लोकप्रियता प्राप्त हुई।[2] इन्दिरा गांधी के कहने पर कमलादेवी चट्टोपाध्याय व पुपुल जयकर ने भारत के गाँवो का भ्रमण किया और इन लोगो द्वारा भारत की सभी लोक व जनजाति कला को प्रकाश में लाने का कार्य किया।

**कमलादेवी चट्टोपाध्याय** ने भारतीय कला के संरक्षण के लिए **1964 में चेन्नई में 'Craft Council of India'** की शुरूआत की थी। यह एक पंजीकृत गैर लाभकारी संस्था है जिसका मुख्यालय चेन्नई, तमिलनाडु में है। इसके अलावा विभिन्न राज्यों में इसके क्षेत्रिय शिल्प परिषद हैं वर्तमान में इसके 9 क्षेत्रिय परिषद हैं जिनमें **दिल्ली, कलकत्ता व हैदराबाद** जैसे नगर भी सम्मिलित हैं। आधुनिक भारत में कमलादेवी

द्वारा देश की विरासत की रक्षा व लोक कला के संर्वधन की दिशा में यह उनका एक अग्रणी प्रयास था। कमलादेवी का लक्ष्य कारीगरों के कौशल व ज्ञान को समाज तक प्रेषित करना, कलाकारों को आर्थिक सहायता प्रदान व स्वयं की पहचान बनाने के लिए एक मंच प्रदान करना था। यह परिषद भारत सरकार व अन्य कार्यकर्ताओं के कारीगरों व उनके शिल्प को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय महत्व सुनिश्चित करने मे कार्यरत है। इस परिषद का मुख्य लक्ष्य कलाकारो को सम्मान व उनके कौशल से उन्हे आत्मर्निभर बनाना है जिससे कलाकारों को आजिविका भी प्राप्त हो साथ ही कला का भी संरक्षण हो। जब एक कलाकार आर्थिक रूप से संबल होता है तब कला भी जीवित रहती है।

*4. क्राफ्ट काउंसिल ऑफ़ इण्डिया में कलमकारी कार्यशाला*

**Craft Village–** यह भारत की सबसे यूवा शिल्प संस्था है जो कला व संस्कृति को बड़ावा देने का कार्य करती है। यह एक गैर सरकारी संस्था है जो भारत के समकालीन लोक कलाकारों व शिल्पकारों को अवसर व विश्व में अपनी पहचान बनानें में सहायता करती है व आर्थिक संबल भी प्रदान करती है। इस संस्था की स्थापना **इती त्यागी** द्वारा **2015 दिल्ली** में की गयी थी। इन्होने शिल्प के माध्यम से शहरी आबादी के शिल्पकारों को प्रशिक्षित किया क्योंकि जब तक कला खरीदार आपकी कला को उसके इतिहास के साथ नही जानता तब तक वह आपके उत्पाद का सही मूल्यांकन नही कर सकता है। इस संस्था द्वारा दस हजार से अधिक शहरी आबादी को शिक्षित किया जा चूका है। यह संस्था भारतीय शिल्पकारों के लिए सबसे बड़ा विपरण मंच है। यहाँ कलाकार समितियों, मीडिया, इंटरनेट, राष्ट्रीय खरीदार व उपभोक्ताओं से एक साथ मिल सकते हैं। **Craft village द्वारा 2018** में **Indian craft week** ( शिल्प मेला ) की स्थापना की गयी जो भारत का अभी तक का सबसे बड़ा शिल्प मेला है। इसका आयोजन प्रति वर्ष होता है। जहाँ भारत के सभी लोक ,जनजाति कलाकार व शिल्पकारों को अपनी कला को प्रदर्शित करने का स्थान दिया जाता है। यह कला मेला विश्व का दूसरा सबसे बड़ा कला मेला है। वर्तमान में भारत **World Craft Council** में स्वयं का राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर रहा है। **Indian Craft Week** के दैरान 2017 में विश्व का सर्वप्रथम शिल्प पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। इसमे अभी तक 40 से अधिक देश भाग ले चूके हैं और 15 देश विजयी हो चूके हैं। यह पहला ऐसा राष्ट्रीय स्तर का मंच है जहाँ कलाकार औपचारिक रूप से लोक कला प्रेमियों व खरीदारों से मिल सकता है व अपनी **Craft Village** कला की विशेषताओं को व्यक्त कर अपने कलारूपों का विक्रय कर सकता है। यहाँ कलाकार व खरीदार में सापेक्ष वार्त्तालाप होती है। अर्थात **Indian Craft Week** भारतीय लोक कलाकारों के लिए एक श्रेष्ठ मंच है। इसके अलावा **Craft Village** नियमित रूप से

कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ का भी आयोजन करता है। यह अपने वेबसाइस के माध्यम से कलाकारों के कला रूपों का विक्रय करने का कार्य भी करता है। कलाकारों के चित्रण विधान को भी इनकी वेबसाईट के माध्यम से देख सकते हैं। इनका ध्येय लोक कला व लोक कलाकारों को विश्व कला बाजार में स्वयं को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रेषित करना।

ये कुछ संस्थाएँ है जो भारतीय लोक कला को जीवित रखने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं व इस दिशा में निरन्तर कार्यरत हैं। इसके अलावा और भी कई संघ व संस्थाएँ हैं जो लोक कला के संरक्षण के लिए कार्यरत हैं परन्तु ये सभी उनमें से सबसे प्रमुख हैं। वर्तमान समय में लोक व शिल्प कलाएँ पारम्परिक नही बल्कि समकालीन कला के रूप में प्रकाश में आ रही हैं जो अन्य कलाओं के समान विश्व कला जगत व कला बाजार में अपना प्रमुख स्थान रखती हैं परन्तु विश्व से परिचित करानें में इन संस्थाओं का योगदान है। इन प्रयासों से लोक कलाओं को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ व कलाकारों को अपनी कला में कार्यरत रहने के लिए प्रेरणा व सहयोग प्राप्त हुआ। वर्तमान में सफल कार्यरत कलाकारों से प्रेरणा लेकर भविष्य के युवा कलाकार भी अपनी स्थानिय कला में कार्यरत रहने में रूचि लेगें क्योकि परम्परा को आगे बड़ाने के साथ–साथ आर्थिक रूप से स्थायी होना भी आवश्यक है। अर्थात इस लेख के माध्यम से मैंने लोक कला के संरक्षण के स्वरूप का अध्ययन करने का प्रयास किया है परन्तु यह विषय और अधिक विस्तार का विषय है क्योंकि भारतीय लोक कला की जड़े अत्यन्त प्राचीन है उसके किसी एक क्षेत्र को भी मात्र एक लेख में पूर्ण नही किया जा सकता।

*5. Craft village में कार्यशाला का आयोजन*

*6. Indian craft week में कारीगर*

*7. Indian Craft Week*
*में वस्त्र कला का प्रदर्शन*

*8. Indian Craft Week*
*कालीघाट चित्रकार व उसकी चित्रकला का प्रदर्शन*

*9. Indian craft week*
*कालीघाट कलाकार व खरीदार*

*10. Indian craft week*
*में हस्तनिर्मित दुपट्टें का प्रदर्शन*

## References

1. Express Web Desk.(2018, April 3).Who was Kamaladevi Chattopadhyay?,The Indian EXPRESS. https://indianexpress.com/article/who-is/who-is-kamaladevi-chattopadhyay-5121371/
2. Weisman, S.R.(1987, October 27 ). "Many Faces of the Mahabharata,New York Times. https://www.nytimes.com/1987/10/27/arts/many-faces-of-the-mahabharata.html?smid=url-share
3. https://www.slideshare.net/slideshow/visit-to-craft-museum/59457564
4. https://dastkarihaat.com/products/organic-reversible-cotton-lined-small-tote-bag-with-two-embroidered-pockets
5. https://dastkarihaat.com/products/organic-reversible-cotton-lined-small-tote-bag-with-two-embroidered-pockets
6. https://www.craftscouncilofindia.in/how-we-support/
7. https://indiacraftweek.com/makers
8. https://indiacraftweek.com/makers
9. https://indiacraftweek.com/makers
10. https://indiacraftweek.com/makers
11. https://indiacraftweek.com/makers
12.https://indiacraftweek.com/makers